ब्रह्मा का गर्वहरण

डॉ. गुरुनाथ दिवेकर

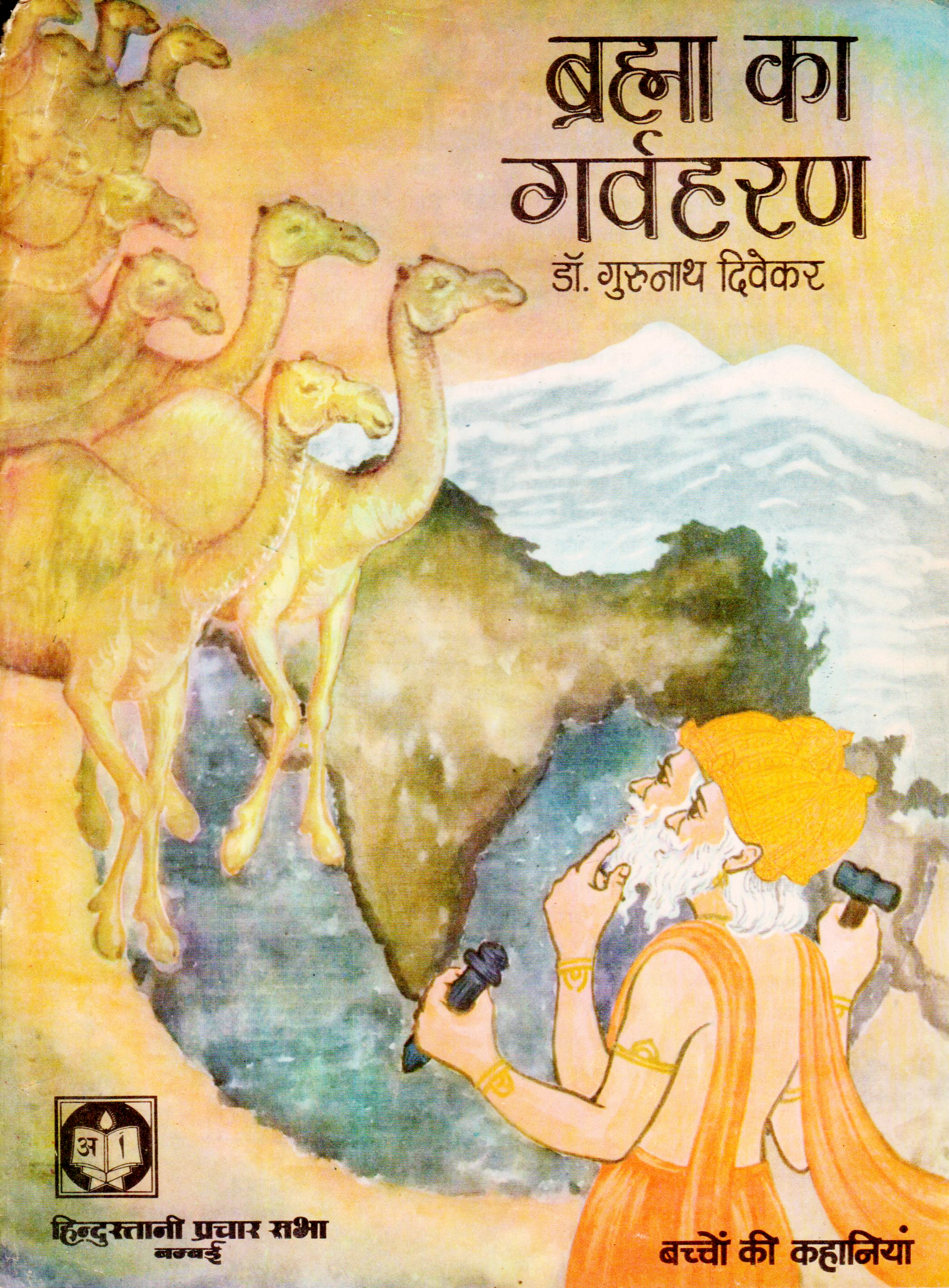

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई

बच्चों की कहानियां

हमारे देश की संस्कृति दुनिया में सबसे पुरानी और काफी समृद्ध है। मगर आपसी झगड़ों, जलन और बैर की वजह से हम कमज़ोर हो गये हैं और इसी वजह से डरी-सहमी हालत में जी रहे हैं। नये ज़माने की शिक्षा भी हमें सुधार नहीं पाई है। इसीलिए इस कमज़ोर और ख़तरनाक हालत से हम उबर नहीं पा रहे हैं। फिर भी यह हक़ीक़त है कि हमारी संस्कृति अत्यंत जीवंत है, कभी मिट नहीं सकती है।

दूसरे प्राणियों के मुक़ाबले आदमी में यह एक विशेषता है कि उसमें धर्म की सूझबूझ है। अच्छा-बुरा, धर्म-अधर्म परखने का उसे विवेक है। मैं तो इसे ही सच्चा धर्म मानता हूं। 'धर्म' वही है जिससे आदमी का सुखी, सार्थक जीवन बनता है। धार्मिक इन्सान समझता है कि दूसरों के सुख में उसका भी सुख है। दूसरो को तबाह करके कोई सुखी नहीं हो सकता। दूसरों के दुःख से जो सुख उठाता है, वह अधर्मी है।

सच्चाई और अहिंसा, धर्म पर चलने के दो रास्ते हैं। दुनिया के सभी धर्मों में इन दो बातों पर ज़ोर दिया गया है। हिन्दू, इस्लाम, बौद्ध, ईसाई, पारसी, जैन, सिख आदि सभी धर्मों के पैग़म्बरों ने धर्म के जिन आदर्शों की बात कही है, वह हर इन्सान के लिए समान रूप से लागू होती है। हमारे देश की परंपरा में सब धर्मों के लिए इज़्ज़त की भावना रही है। हिन्दू धर्म का दायरा बहुत बड़ा और सबका भला चाहनेवाला रहा है। अफ़सोस है तो इस बात का कि हम लोगों में एक के बाद एक कमज़ोरियां आती गईं और एक उदार धर्म की अनमोल दौलत हम संभाल नहीं सके।

आज इस बात की ज़रूरत है कि दुनिया के विकसित धर्मों में हमारे लिए जो आवश्यक बातें कही गयी हैं उन्हें हम समझें और अपने जीवन में उन पर चलने की कोशिश करें।

नई पीढ़ी को सही समझ और शिक्षा देने के लिए ऐसे विचार उनके सामने रखना ज़रूरी है जिससे वे आदर्शों की तरफ प्रेरित हों और ज़िन्दगी का सही रास्ता उन्हें मिल सके।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा ने इसी उद्देश्य से दुनिया के मुख्य धर्मों में जो शिक्षाप्रद कहानियां हैं, बडे-बडे संत-पैग़म्बरों की ज़िन्दगी में जो सच्ची घटनाएं हुई हैं, उन्हें लेकर एक सौ सचित्र पुस्तकें छापने की योजना बनाई है।

कहानियां इस तरह रखी गयी हैं कि बच्चों को वे उपदेश नहीं, जीवन से जुड़ी हुई मालूम हों और आसानी से समझ में आ जायें। मुझे उम्मीद है कि बच्चों के माता-पिता भी इन कहानियों को दिलचस्पी से पढ़ेंगे और अपने जीवन को समृद्ध करेंगे।

मुझे उम्मीद है कि इस कोशिश को पसन्द किया जायेगा, इस पर अमल किया जायेगा और इसका प्रचार किया जायेगा।

मोरारजी देसाई

अध्यक्ष,
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

ब्रह्मा का गर्वहरण

गुरुनाथ दिवेकर

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

बम्बई

© हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, १९८१

त्रिकार :

० ल० मानकर

० एम० शैणे (मुखपृष्ठ)

मूल्य :

दो रुपये

मुद्रक :

अकील दीवानजी

ऑनलुकर प्रेस

१६, सासुन डॉक

कोलाबा, बम्बई–४०० ००५

प्रकाशक :

वाडीलाल डगली

मानद मंत्री

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग

बम्बई–४०० ००२

एकमात्र विक्रेता

एस० चन्द एन्ड कंपनी लि०

मुख्य कार्यालय : रामनगर, नयी दिल्ली-११००५५

शो रूम : ४/१६-बी, आसफ अली रोड, नयी दिल्ली-११०००२

शाखाएं :

अमीनाबाद पार्क, लखनऊ-२२६००१

२८५/जे, बिपिनबिहारी गांगुली स्ट्रीट, कलकत्ता-७०००१२

सुल्तान बाजार, हैदराबाद-५०००01

३, गांधी सागर ईस्ट, नागपुर-४४०००२

खजांची रोड, पटना-८००००४

माई हीरां गेट, जालन्धर-१४४००८

१५२, अन्न सलाए, मद्रास-६००००२

ब्लैकी हाऊस, १०३/५, वालचन्द हीराचन्द मार्ग, बम्बई-४००००१

के० पी० सी० सी० बिल्डिंग, रेसकोर्स रोड, बंगलोर-५६०००६

६३१-७, महात्मा गांधी रोड, एरनाकुलम, कोचीन-६८२०११

ब्रह्मा का गर्वहरण

हम जिस संसार में रहते हैं उस पर त्रिमूर्ति याने ब्रह्मा, विष्णु और महेश, इन तीनों देवताओं का अधिकार चलता है और हर एक का काम निश्चित है। ब्रह्मा आदमियों का, जीव-जन्तु, जमीन, नदी-नाले, पहाड़ आदि का सर्जन करते हैं। वे महान कलाकार हैं। दुनिया बनाने के साथ उनका काम समाप्त होता है।

ब्रह्मा की इस अद्भुत सृष्टि की रक्षा विष्णु करते हैं। वे क्षीरसागर में, शेषनाग के विशाल फन पर आराम करते हैं। उनकी नाभि से एक कमल निकला है जिसके कारण विष्णु जी को पद्मनाभ भी कहते हैं। इसी कमल पर चार मुख वाले ब्रह्मा रहते हैं।

शिव बुराइयों के विनाश का काम करते हैं।

इतनी बड़ी दुनिया बनानेवाले ब्रह्मा बड़े कलाकार तो जरूर हैं, परन्तु सुन्दर प्रकृति की रचना के सिवा दूसरी बातों में उनका बस नहीं चलता।

एक दिन ब्रह्मा अपनी कलाकृति पर बहुत खुश हुए और सोचने लगे कि उनके समान महान देवता और कोई नहीं है।

अपनी प्रशंसा वे स्वयं ही करने लगे, "अहा, क्या कमाल कर दिखाया मैंने ! पृथ्वी जैसी बड़ी, सुन्दर गेंद मेरे सिवा और कौन बना सकेगा ?

"यह देखो हिमालय, जैसे आकाश के साथ बातें करता खड़ा है। इसी से निकली गंगा और यमुना, भारत के विशाल मैदान को हरी-भरी फसल, फल-फूल से भर देती है।"

"नीला आकाश पौ फटने से लेकर सांझतक न मालूम कितने रंग बदलता हुआ, मेरी अपूर्व कलाकारी की घोषणा करता है। शाम ढलते ही तारों की मालाएं पहनकर, माथे पर चांद का टीका लगाकर प्रकृति कैसी सुन्दर दीखने लगती है।"

"और विष्णुजी को तो शेषनाग की सेज पर आराम-ही-आराम है ! उन्हें क्या मालूम कि मेरी कला का भूगोल-खगोल में डंका बजता है !"

अपनी रचना पर फिदा ब्रह्मा जी ने घर लौटने से पहले फिर एक बार अपनी दुनिया पर दूर-दूर तक नजर दौड़ाई। लेकिन

"अहा, क्या कमाल दिखाया मैंने!"

हाय, उनका मजा किरकिरा हो गया। एक अजीब नजारा देखकर वे चौंक उठे।

बात यह थी कि उनको ऐसे जानवरों की कतारें नजर आयीं कि जिसे उन्होंने कभी बनाया नहीं था। ऐसे भद्दे जानवर वे किसलिए बनाते? उसकी टेढ़ी गर्दन, उसका लटकनेवाला निचला होंठ, डरावनी-सी आंखें, खुरदरे पीठ! अरे, किस बुध्दू ने इसे सजाया? शर्म आनी चाहिए उसे!... ब्रह्मा जी सोचने लगे।

लेकिन उन प्राणियों की कतारें एक-के-बाद-एक चली आ रही थीं।

ब्रह्मा जी ने सोचा कि चलो, इस जन्तु का नाम तो मालूम कर लें। मगर उन्हें नाम बताता कौन? कोई आदमी तो वहां दिखायी नहीं दिया। सुबह से शाम तक इन जानवरों की अनगिनत पंक्तियां चलती रहीं और ब्रह्मा जी यह तमाशा देखते रहने के सिवा कुछ कर नहीं सके।

शाम का अंधकार धरती पर फैलने लगा। ऐसे में बहुत दूर, उन टेढ़े-मेढ़े जानवरों में से एक पर सवार होकर, एक आदमी आता हुआ दीखा।

ब्रह्मा जी ने उसको टोकते हुए पूछा, "यह क्या गोरखधन्धा है? ये जानवर किसने बनाये? उनका मालिक कौन है? मेरी धरती पर बिना मेरी आज्ञा के घुसे आ रहे हैं ये और इनका तांता रुकने का नाम नहीं लेता! कौन हो तुम?"

ब्रह्मा जी बोलते तो रहे पर उस आदमी ने आंखें उठाकर उनकी तरफ देखा तक नहीं।

कारवां बढ़ता गया और ब्रह्मा जी हाथ-पर-हाथ धरे खड़े रहे। उनको लगा कि सवार बड़ा शक्तिशाली होगा, इसलिए कुछ नरमी से बोले, "बताओ तो सही, ये कौन से जानवर हैं और तुम किस लोक से यहां पधारे हो?"

इस बार सवार कुछ रहमदिल हुआ और बोला, "तुम निरे गंवार हो। अगर मैं बताऊं तो भी उससे क्या फायदा? तुम्हारे पास अकल की दौलत कहां है?"

ब्रह्मा जी चौंक पड़े। इस बेढ़ब, बदसूरत सवार से कहें तो क्या कहें!

फिर सवार ही बोला, "ध्यान से सुनो, ये ऊंट हैं। तुम ऐसे जानवर अबतक नहीं बना सके क्योंकि भगवान विष्णु ने तुम्हारी कारीगारी में इतनी कसर रख छोड़ी थी।

" इन ऊंटों की पीठ पर कुछ दिखता है तुम्हें ?"

ब्रह्मा जी बोले, " मुझे कुछ नहीं दीखता । मैं तो ऊंटों को देखकर ही दंग रह गया हूं ।"

" इन ऊंटों को पीठ पर पिटारियां हैं !," सवार ने समझाया।

" पिटारियों में क्या है ?" ब्रह्मा ने पूछा ।

" एक-एक पिटारी में एक-एक ब्रह्मा है", सवार बोला ।

" बाप रे बाप ! मैं समझता था कि मैं एक ही ब्रह्मा हूं । इतने ब्रह्माओं का क्या काम ?," ब्रह्मा जी ने हैरान होकर पूछा ।

सवार ने कहा, "जरा कान खोलकर सुनो। तुम जिस तरह इस पृथ्वी के ब्रह्मा हो, वैसे ही, ब्रह्माण्ड में अनगिनत लोक हैं। उन हर एक के लिए एक-एक ब्रह्मा होता है, जिन का काम देखते हैं भगवान विष्णु।

"अभी-अभी उनके पास शिकायतें आने लगी हैं कि ब्रह्मा कभी-कभी अपने मामूली काम को बड़ा कमाल समझते हैं और उनमें गर्व, अहंकार बढ़ता जा रहा है। इसलिए स्वामी ने मुझे हुक्म दिया है कि जाओ, देखो, ऐसे कौन ब्रह्मा हैं। अगर ये लोग सचमुच अहंकारी तथा मगरूर हो गये हैं तो उनको रस्सी से बांधकर मेरे सामने लाओ और उनकी जगह इस बक्से में से एक नये ब्रह्मा को नियुक्त करो।"

ब्रह्मा अवाक हो गये। उन्होंने आंखें मूंदकर भगवान का ध्यान किया। उनके दिल में शेषशायी भगवान की मूर्ति रूप लेने लगी।

सवार बोलता ही जा रहा था, "मुझे समाचार मिला है कि इस सृष्टि का ब्रह्मा भी अपने काम पर इतना खुश हो गया है कि घमण्ड से..."

ब्रह्मा जी के होश गुम थे। वे पत्थर की मूर्ति बन गये थे। सवार को उत्तर क्या देते?

सुबह की हल्की रोशनी फूटने लगी। संसार जागने लगा। ब्रह्मा जी भी धीरे-धीरे होश में आये। उनकी आंखें खुल गयीं। उनको न ऊंट नजर आये न पिटारियां, और न नजर आया वह दण्डपाशधारी सवार!

ब्रह्मा जी शर्म के मारे पानी-पानी हो गये। उनको अपनी भूल समझ में आ गयी। एक कारीगर के नाते उन्होंने काम अच्छा किया था परन्तु उसको ही अपना अनोखा कमाल समझकर, वे उस पर घमण्ड कर रहे थे।

उन्होंने भगवान विष्णु से अपनी भूल की क्षमा मांगी और पुकारा, "भगवन्! तेरी जय हो! मेरी नासमझी और घमण्ड को दूर करने के लिए तुझे इतना कष्ट सहना पड़ा। मैं तो तेरा आज्ञाकारी साथी हूं और अब ईमानदारी से विनयपूर्वक अपना काम करता रहूंगा।" ●

दो भाई

शंख और लिखित दो भाई थे। शंख बड़ा था और लिखित छोटा। दोनों भाई स्वभाव से ऋषियों की तरह साधुपुरुष थे। वे विवाह, सन्तान, जमीन-जायदाद जैसे मोहपाश में पड़ना नहीं चाहते थे।

पवित्र गंगा नदी के किनारे उन्होंने अपना-अपना तपोवन बना लिया था और वहीं पास-पास रहने लगे। देखते-देखते तपोवनों में तरह-तरह के ऊंचे-ऊंचे पेड़, फूल को बेलें, फलों से लदे वृक्ष लहराने लगे। हरी-हरी घास से ललचाकर हिरणों के झुण्ड तपोवन में निडर होकर घूमते थे। इन दोनों भाइयों की साधुता से प्रभावित होकर वहां कई अन्य ऋषि, शिष्यगण भी आये और पर्णकुटियों में रहने लगे।

होम, हवन तथा वेदपाठ से तपोवन गूंज उठा।

दोनों भाई अपने-अपने आश्रमों में रहते हुए भी हर रोज एक-दूसरे से प्रेम से मिलते थे। छोटा भाई अपना नित्यक्रम पूरा करके बड़े भाई से मिलने, उनके आश्रम में जाता। वे दोनों सगे भाई थे इसलिए एक तरह से दोनों उन तपोवनों के मालिक थे। परन्तु तपस्वियों का एक व्रत होता है जिसे अपरिग्रह कहते हैं। इसका मतलब है किसी भी वस्तु की मालकियत से बचना।

छोटा भाई बड़े भाई से मिलकर कुशल-मंगल पूछता, उनका कोई काम हो तो वह करने की आज्ञा लेकर, सीधे अपने आश्रम में लौट आता। इसी तरह, हर रोज

शाम को बड़ा भाई भी छोटे भाई के आश्रम में जाता, और आशीर्वाद देकर लौटता ।

इन दोनों ऋषि भाइयों के सदाचार से उनकी ख्याति बहुत फैली। गंगा प्रदेश का राजा भी उनके आश्रम में, उनकी सेवा करने की इच्छा प्रकट करता। आसपास रहनेवाले संसारी लोग भी रोजमर्रा की झंझटों से थोड़ी राहत पाने के लिए आश्रम में आते और तपोवन की शोभा और शांति से सन्तुष्ट होकर अपने-अपने घर लौटते। दोनों ऋषि भाई त्योहार के दिन उपदेश करने बाहर निकलते और जनता में अच्छी बातों तथा सद्धर्म का प्रसार करते ।

एक दिन छोटा भाई, हर रोज की तरह अपने बड़े भाई से मिलने गया ।

गर्मियों के दिन थे। ऋतुराज वसंत ने पतझड़ से नंगे हुए पेड़-पौधों को हरे, पीले, लाल लिबास पहना दिए थे। रंग-बिरंगे फूल हवा में हिल रहे थे। सबसे अधिक शोभा आमों के बगीचे में छायी हुई थी। आमों के भार से पेड़ कुछ झुके से दीखते थे। आम के मौसम का डंका बजाने के काम पर कोयल की बहाली हो गयी थी।

छोटा भाई उसी बगीचे के पास से गुजरा । आम देखकर वह कुछ ललचाया। तपोवन अपने भाई का सही, परन्तु अपने अपरिग्रह-व्रत के कारण वह उन आमों को पराया मानता था। आम की डाल से कुछ मीठे फल तोड़ने को उसका मन बेचैन हुआ। लेकिन किसी तरह उसने अपने दिल पर काबू कर लिया और सीधे बड़े भाई के आश्रम पहुंच गया ।

बड़ा भाई उस दिन किसी जरूरी काम से, सबेरे-सबेरे पर्णकुटी से बाहर निकल चुका था। छोटा भाई थोड़ी देर उनकी बाट जोहता रहा। देर होती देखकर सोचा कि फिर मिलूंगा ।

वापस आते हुए रास्ते में फिर एक बार आम का बगीचा मिला। कोयल कूक रही थी। उसका मन फिर ललचाया ।

उसने मन को समझाने की कोशिश की, "अरे मूर्ख मन, क्या मेरे अपने तपोवन में आम के पेड़ नहीं हैं ? दादा के आमों में ही क्या खास है ? जल्दी यहां से निकल जा।"

फिर आसपास देखने लगा कि कहीं

"उसने हाथ ऊंचा उठाया और मोटा-ताजा, पका आम उसकी हथेली में आ गया।"

कोई उसे ऐसी ललचायी हुई हालत में न देख ले। वहां कोई नहीं था। ऋषियों के बच्चे झील के किनारे खेल रहे थे। लिखित को लगा कि आम की डाली झुक-झुककर उसको न्योता दे रही है। दिल पर पत्थर रखकर वह आगे की ओर दौड़ पड़ा, लेकिन आमों का लालच उससे भी तेज दौड़ा।

धीरे-धीरे, आसपास नजर डालता हुआ, दूसरों की नजरों से बचता हुआ वह वापस उन पके हुए आम की डालों तक आ पहुंचा। उसको लगा कि आम खुद उसके हाथ में आ गिरने के लिए आतुर हैं। वह चारों तरफ देखता रहा कि कहीं कोई उसकी हरकतों को ताक न रहा हो। उसने हाथ ऊंचा उठाया और मोटा-ताजा, पका आम उसकी हथेली में आ गया।

घर जाकर उसने आम खाया और अपने बिस्तर पर जा लेटा। लेकिन एक अजीब विचार उसे बेचैन किए था, " मैंने अपने भाई के तपोवन से आम ले लिया। भाई का बाग मेरा भी है, लेकिन जब वे बाहर गये थे उस समय आम ले लेना चोरी नहीं तो क्या है?"

लिखित उठ बैठा। आम का मीठा रस अब उसे जहर महसूस हुआ और उसने नौली क्रिया से, पेट में से आम का रस उल्टी करके बाहर निकाल दिया। रस तो पेट में नहीं रहा फिर भी लिखित को नींद नहीं आयी। मन इतना अशांत था कि उससे माला भी फेरी नहीं जा सकती थी। तारे देखते रहने से भी कोई आराम नहीं मिला।

" हाय भगवान, सबेरा कब होगा?", लिखित कराहते हुए करवटें बदलता रहा।

वह सबेरे उठा तो पता चला की शंख भाई पिछली रात ही लौट आये थे। उसने सोचा कि भाई से मिलकर सब बातें साफ-साफ कहनी चाहिए।

वह बाहर निकला।

भाई की पर्णकुटी में जाने के लिए उसने दूसरा रास्ता खोज लिया। आम के बगीचे अब उसे डरावने मालूम होते थे।

आश्रम पहुंचकर लिखित ने भाई को प्रणाम किया और चुपचाप एक ओर बैठ गया।

भाई को अशांत देखकर शंख ने पूछा " क्यों भाई, तबीयत तो ठीक है न?"

लिखित फूट-फूटकर रोने लगा।

कुछ समय बाद शान्त होकर बोला, " भाई, मुझे क्षमा करना क्योंकि मैंने आपके माल की चोरी की है ।"

शंख बोला, " भई वाह, हम दोनों तपस्वी हैं और संसारियों की तरह हम किसी चीज के भी मालिक नहीं कहलाते। फिर मेरे माल की चोरी का क्या अर्थ है ?"

लिखित बोला, " दादा, मैंने लालच में आकर आपके तपोवन से आम ले लिया था । कोई चोर ऐसा करता तो उसमें कोई दोष नहीं । यह उसका पेशा ही है । लेकिन मैं ठहरा तपस्वी ! आप बाग के मालिक भले न हों, फिर भी आपने पेड़-पौधों का पालन किया है और वे आपके प्यारे हैं । ऐसी हालत में आपकी आज्ञा के बिना खाना अपराध है । मैं इससे लज्जित हूं और मन की शान्ति खो बैठा हूं । इसलिए कृपया मुझे इस अपराध की सजा फरमाइए !"

शंख बोला, " अरे बेटे, मेरे विचार में तो इसमें कोई अपराध नहीं है । हम दोनों सगे भाई हैं और जो मेरा है, वह तेरा भी है । फिर चोरी कैसी ? किसी शास्त्र में भी ऐसे काम के लिए कोई प्रायश्चित नहीं कहा गया है ।"

लिखित ने जबाब दिया, "लोग मुझे तपस्वी समझते हैं और उनको मेरी चोरी मालूम हो जाने पर वे यही तो कहेंगे कि यह बैरागी हमारी आंखों में धूल झोंकता है । यदि आप मुझे सजा देने के अधिकारी न हों तो हम राजा से शास्त्रार्थ करायें । वह जो सजा देगा, उसे मैं खुशी से स्वीकार करूंगा ।"

शंख को भाई की दलील ठीक लगी और वे दोनों राजा से मिलने चल पड़े ।

दोनों अनशन कर रहे थे और राह चलते थक भी गये थे । दोनों मौन थे । परन्तु उनके मन में इस बात का खेद था कि इतनी तपस्या करने के बाद भी जीत लालच की हुई थी ।

जब वे राजधानी पहुंचे तो खुद राजा उनकी अगवानी के लिए राजमहल की सीढ़ियां उतरकर आया । उन दोनों को बड़े सम्मान से दरबार में ले जाकर, सुखासन पर बिठाया, झुककर प्रणाम किया और बोला, " महात्माओ, आपके आने से यह शहर पवित्र हुआ है । कहिए, मैं आप लोगों की क्या सेवा कर सकता हूं ?"

लिखित खामोश बैठा था ।

शंख ने राजा को मामला समझाते हुए कहा, "राजन्, हम दोनों तपस्वी हैं और हमें किसी बात की तकलीफ नहीं है। फिर भी मेरे इस छोटे भाई को इस बात का दुख हो रहा है कि उसने मेरे बाग से आम का एक फल खाया। वह समझता है कि यह चोरी है, और उसे इसकी सजा मिलनी चाहिए। मैं आपसे विनती करता हूं कि राजा के नाते आप इसको सजा दें।"

राजा ने बहुत सोचकर कहा, "महात्मन्, जंगल के फल-फूल तो वनवासियों के लिए ही होते हैं। उसमें न तो चोरी है, न ही राजा को तपस्वियों को दण्ड देने का अधिकार है। आप ही मुझे इस मामले में सलाह दीजिए। आपका तपोवन है। आप ही अपने भाई को सजा दें।"

अब लिखित बोला, "राजन, सुनिए। मैंने भाई से कहा था कि वे मुझे सजा दें, पर उनके मन में मेरे लिए बहुत प्रेम है। वे मुझे सजा नहीं देना चाहते। आप राजा हैं और अपराध का दण्ड देना आपका कर्त्तव्य है।"

राजा अपना फर्ज समझ गया।

वह गरज कर बोला, "अरे! कोई है?"

"जी हुजूर," आठ-दस सिपाही सामने आकर खड़े हुए।

"इस आदमी को कठघरे में ला खड़ा करो," राजा ने हुक्म दिया।

आदमियों ने लिखित को राजा के सम्मुख हाजिर किया।

राजा ने लिखित से पूछा, "क्या तुमने अपने भाई के बाग से आम चुराकर खाया?"

लिखित, "जी हां!"

राजा, "क्या अपना अपराध मानते हो?"

लिखित, "मानता हूं हुजूर।"

राजा, "अपनी सफाई में कुछ कहना चाहते हो?"

लिखित, "कुछ नहीं हुजूर!"

राजा ने लुहार को बुलवाया और उसको हुक्म दिया कि वह मुजरिम के दोनों हाथ काट डाले।

लुहार ने लिखित को तख्ते पर सुलाकर, निहायत बेरहमी से उसके दोनों हाथ काट दिए जैसे पेड़ों से टहनियां काटते हैं।

लिखित निश्चल था। उसकी आंखों से आनन्द के आंसू बहने लगे, परन्तु उसकी भुजाओं से खून के फव्वारे फूट निकले।

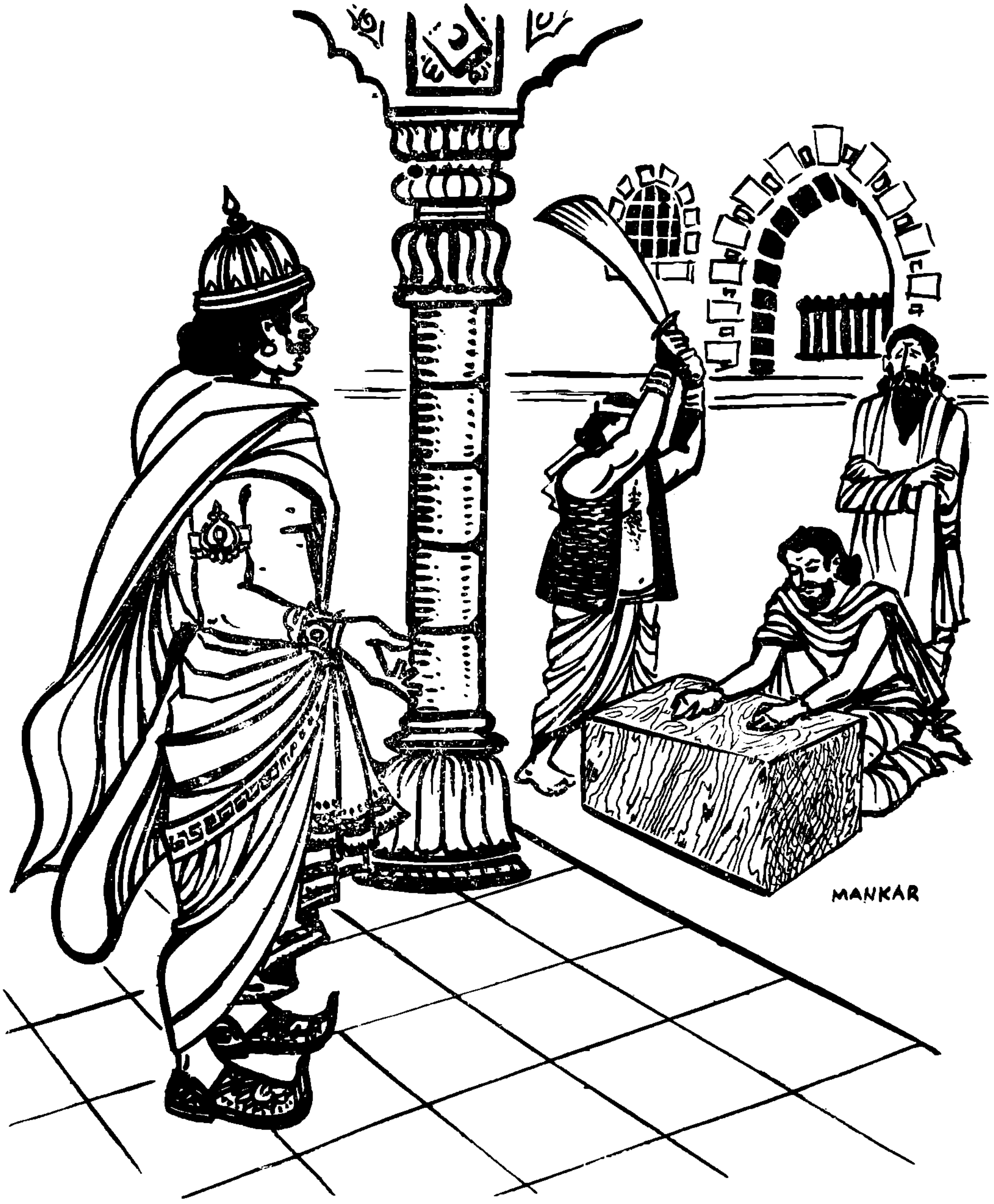

"राजा ने हुक्म दिया कि मुजरिम के दोनों हाथ काट डाले जायें।"

वैद्यराज ने बहुत कोशिश की, मरहम-लेप लगाए, तब जाकर खून बंद हुआ।

राजा बोला, "देवर्षियों, मैंने अपना कठोर कर्त्तव्य कर दिया। मैं चाहता हूं कि जख्म भर जाने तक आप दोनों मेरे अतिथि बने रहें।"

लिखित बोला, "राजन्, आपने मुझे सजा देकर मुझे मन की व्यथा से मुक्त किया है। धन्यवाद! अब हम अपने आश्रम लौटते हैं। आज्ञा दीजिए।"

दोनों भाई राजधानी से चल दिए।

आश्रम पहुंचते समय सूर्य माथे पर आ गया था। छोटा भाई गंगा में उतरा और अपने पिता को अर्ध्य देने की कोशिश करने लगा! हाथ तो थे नहीं, पर मन में श्रध्दा थी। इसलिए पिता का स्मरण करते-करते उसने कटी भुजाएं पास-पास लायीं और आंखें बंद करके पिता को अंजलि अर्पण करने लगा।

एक चमत्कार घटित हो रहा था। अर्ध्य देनेवाली भुजाएं बढ़ने लगीं और देखते-देखते पूरा हाथ तैयार हो गया।

बड़े भाई गंगा किनारे खड़े थे परन्तु ध्यानमग्न लिखित को उसका पता नहीं था। जब उसने अपनी आंखें खोलीं तो अपने दोनों हाथ वापस पाकर वह बहुत खुश हुआ और यह अजीब घटना शंख को सुनाने के लिए घाट की सीढ़ियां तेजी से चढ़ने लगा।

बड़ा भाई, जो यह चमत्कार देख रहा था, समझ गया कि लिखित की पितृ-निष्ठा रंग लायी। लिखित ने उसके चरण छूकर उनका आशीर्वाद मांगा।

शंख बोला, "जबसे मैंने तुम्हें अपंग बना देखा, मेरा चैन, आराम, नींद सब समाप्त हो गयी थी। मुझे तुम्हारी गहरी चिन्ता लगी थी।"

लिखित ने पूछा, "मैंने अपराध की ठीक सजा पायी। उसमें चिंता की कौन-सी बात है?"

शंख ने उसकी पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा, "मेरे भाई, हमने पूरी जिन्दगी कर्म और फल के बारे में विचार करते हुए गुजारी है। तुमने तो अपने अपरिग्रह व्रत के लिए बहुत ही कठोर दण्ड पसन्द किया था। चलो, अच्छा हुआ, भगवान तुम्हारी सत्यनिष्ठा से सन्तुष्ट हुए और उन्होंने तुम्हारे लायक वरदान भी दिया। हमारे पूर्वजों ने यह ठीक ही कहा है:

"तुम धर्म की रक्षा करो
धर्म तुम्हारी रक्षा करेगा।"

हमारे आगामी प्रकाशन

- कृष्ण का गोवर्द्धनधारण
- अचल आख्यान
- हक की रोटी
- श्वेतकेतु
- प्यारे नबी
- घास के मूसल
- द्रोण-द्रुपद
- बलि का बकरा
- हजरत राबिया बसरी
- सेवा की राह

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा की स्थापना 1938में महात्मा गांधी की प्रेरणा तथा पेरीन बहन केप्टन के सद्प्रयत्नों से हुई थी। इस संस्था की कोशिश ऐसी राष्ट्रभाषा विकसित करने की रही है, जिसे आम जनता आसानी से समझ सके और जो नागरी व उर्दू दोनों लिपियों में लिखी जा सके। वह भाषा है हिन्दुस्तानी।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा दुनिया के सभी धर्मों से चुनी हुई, ज्ञान और आनन्द से भरी हुई कहानियों की एक सौ किताबों का जो सेट बच्चों के लिए तैयार कर रही है, यह उसकी पहली किस्त है। हर किताब की कीमत दो रुपये होगी।

बच्चों की कहानियां

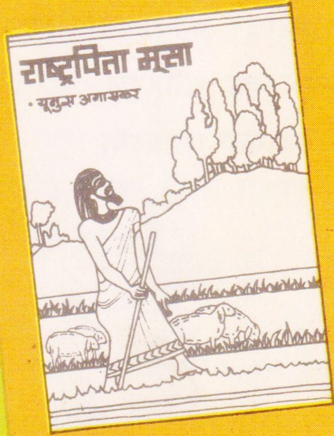

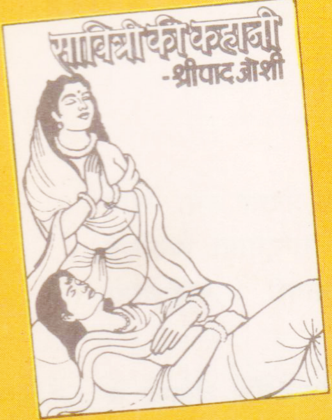

एकमात्र विक्रेता
एस. चांद एंड कंपनी लि.
पो. बॉ. नं. ५७३३
रामनगर
नयी दिल्ली - ११० ०५५